12-5-67 ओम शान्ति रात्री क्लास

बारामदी मनुष्य सृष्टी का झाड है। शास्त्रों में नाम रख दिया है कल्प वृक्ष। अब तुम बच्चों की सारी झाड बुधी में है। मनुष्य तो कल्प को लाखों वर्ष का कह देते है। है 5000वर्ष का। जैसे पृथ्वी पर वृक्ष है वैसे ही मनुष्य सृष्टी का भी वृक्ष है। उसको फर नया और पुराना कहेंगे। दुनियाँ भी नई और पुरानी होती है नाँ। हर एक चीज ऐसे होती है। पुराने में तो है रावण राज्य। नई दुनियाँ में है रामराज्य। आधा-2 हो गया। नर्क में सभी नर्कवासी पतित है। स्वर्ग में सभी पावन होते है। नई दुनियाँ में एक धर्म पुरानी दुनियाँ में अनेक धर्म। अनेक मनुष्य भी है। फिर पुरानी से नई करनी है। यह बाप का काम है। बाप पुरानी को नया बनाते है। वो दिन वो रात। हम ही नई दुनियाँ के आद में और हम ही पुरानी दुनियाँ के अन्त में है। नई दुनियाँ में हम पूज्य फिर पुरानी दुनियाँ में हम पतित पुजारी है। यह समझानी बाप ही देते है। बच्चे जानते है कि बाप हर कल्प पर आते है संगम युग पर। इसको ही कहा जाता है पुरुषोत्तम संगम युग। आत्मा और परमात्मा जब मिलते है तो वो इसी संगम युग की महिमा है। पहले-2 समझाना है कि एक बेहद का बाप है एक हद का बाप है। उनकी महिमा भी गाते ही रहते है। वो ही सभी आत्माओं का बाप है। ब्र,वि,शं को बाप नहीं कहेंगे। सन्यासी भी दो प्रकार के है। एक हठ योग सन्यासी, तुम्हारा है बेहद की पुरानी दुनियाँ का बेहद का सन्यास। सन्यासी घर बार छोड़ते है। तुम जानते हो कि यह सारी दुनियाँ ही पुरानी है। शरीर भी पुराना है। अब नया मिलना है। बाप कहते है कि नये विश्व के मालिक बन सकते हो। तुम राजयोगी हो। वो लोग योग अनेक प्रकार के सिखाते है। बाप कहते है कि योग अक्षर भूल जाओ। यही तो चलते फिरते बाप को याद करना है। पतित पावन बाप को याद करने से पाप भस्म हो जावेंगे। फिर पुण्यात्मा बन जावेंगे। तुम बच्चों को तो 3/4सुख है। बाकी 1/4दुःख है। यह 84जन्मों की समझानी तुम बच्चों के लिए है। आत्मा जानती है कि शरीर में देवता थी फिर मैं बन रही हूँ। 84जन्म भी देवतायें ही लेते है। तुम बच्चों को पहले-2 ब्राह्मण बनना होता है। चोटी ब्राह्मण। फिर देवता क्षत्री वैश्य शुद्र। तुम बच्चे जैसे कि बाजोली खेलते रहते हो। चक्र फिरता ही रहता है। इतनी छोटी सी आत्मा में 84जन्मों का पार्ट अविनाशी, जो कि अनेक बार बजाया है तो भी भरा हुआ है। कितनी छोटी आत्मा है। टूटती फूटती भी नहीं है। छोटी बड़ी नहीं होती है। तुम जानते हो कि हम नाटक के पूरे 84जन्म पार्ट बजाने वाले आदी सनातन देवी देवता धर्म वाले ही है। बच्चों को मालूम है कि हम 84जन्मों का चक्र लगा कर आये है। अब अपने को आत्मा समझना है। आत्मा ही शरीर लेकर भिन्न-2 पार्ट बजाती है। हम आत्मा है यह ज्ञान सतयुग में भी रहेगा। सतयुग में भी बुधी में रहता है कि बस अब सभी हमको वापस घर जाना है। यह पुराना शरीर छोड़ कर फिर नया सतोप्रधान मिलेगा। सर्प भी पुरानी खल छोड़ देते है नाँ। तुम बच्चे सारी दुनियाँ भर में पीस स्थापन कर रहे हो। करवाने वाला है शिव बाबा। फिर उनसे प्राइज भी बहुत मिलती है। तुम ऐवर पीस फुल बाप की श्रीमत पर सारे विश्व पर पीस स्थापन कर रहे हो। तुम्हारी बुधी में है कि हम नर से श्री नारायण नारी से श्री लक्ष्मी पद को प्राप्त कर रहे है। बाप भी कहते है कि हम राजयोग सिखा रहे है। इसलिये ही पुरा पुरुषार्थ करना है। ज्ञान भी गुप्त योग भी गुप्त, प्रारब्ध भी गुप्त। भारत में अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हो श्रीमत पर

*******   **   *******  ***  **  *****

कोई हथियार नहीं। कोई आवाज नहीं। सिर्फ बाप की याद ही में रहना है। याद में ही विघ्न पड़ते है। पढ़ाई में विघ्न नहीं पड़ते है। वो तो बहुत सहज है। भाषण करने की भी बहुत होशियारी चाहिये। कांग्रसियों में कोई-2 बहुत होशियार थे भाषण करने में। अभी तुम जगाते रहते हो। फिर सो जाते है। शाहूकार तो झट सो जाते है। वो तो समझते है हम यहां ही स्वर्ग में है। उस नशे में ही रहते है। गरीब जल्दी उठावेंगे। शाहूकारों की तकदीर में कम है। शाहूकार बनेंगे गरीब, गरीब बनेंगे शाहूकार बनेंगे। यहाँ तो बाप कहते है कि तुम्हारा पति मरे वा कुछ भी हो ताली बजाते रहो। खुशी में हलवा खाओ। प्रैक्टीकल में बच्चियाँ करती भी है। वो गया दुसरा पार्ट बजाने फिर दुःख काहे का। गुडनाईट